21.1.67 ओमशांति रात्रीक्लास

बाप ने बच्चों को अपना परिचय दिया।सबको तो नहीं देंगे।फिर बच्चों को बाप का परिचय देना है।बाप का परिचय कोई डिफिकल्ट नहीं है।उनका नाम ही है परमात्मा शिव।गाया भी जाता है शिव परमात्मा नमः। शंकर परमात्मा नमः वा विष्णु परमात्माय नमः नहीं कहा जाता।शिव परमात्माय नमः कहा जाता है।तो परमपिता शिव नमः हो गया।पिता अक्षर डालने से बच्चे तो हैं ही सब एक बाप के।यह हुआ परिचय फिर समझाना चाहिए बाप नई दुनियां रचते हैं।उसमें होता है ल.ना. का राज्य।बाप आकर राजयोग सिखाते हैं।बरोबर भारत में जब जन्म लेते हैं तो बाप नई दुनियां की स्थापना ,पुरानी दुनियां का विनाश कराते हैं।राजयोग शिव परमात्मा ही सिखाते हैं।भगवान एक ही है।वो निराकार है।कृष्ण मनुष्य है।जरूर श्रीकृष्ण की आत्मा ने आगे जन्म में बाप से राजयोग सीख वर्सा पाया होगा।नोट करना चाहिए और फिर ऐसे ही लिखाना चाहिए।अब वो ही समय है ना।महाभारत का समय है।बाप राजयोग सिखा रहे हैं ब्रह्मा द्वारा।ब्रह्मामुखवंशावली जरूर (शुरू)में होने चाहिए।पहले ब्राह्मण फिर हैं देवतायें।यह सब ब्रह्माकुमार कुमारियां कहलाते हैं।अब राज्य भाग दे रहे हैं तब तो हम कहते हैं ना।अच्छी रीति बाप और रचना का परिचय देना है।बाप का परिचय बच्चे ही दे सकते हैं।ऐसे2 विचार–सागर–मंथन कर युक्तियां रचनी होती हैं।बाप का परिचय जरूर देना है।है भी सबका बाप।ब्राह्मण ही बाप का परिचय दे सकते हैं।ब्रह्मा है एक शिवबाबा का बच्चा।प्रजापिता तो यहां है ना।ब्रह्मा द्वारा ही रचना रचते हैं।प्रजापिता भी ब्रह्मा को ही कहा जाता है।विष्णु वा शंकर को प्रजापिता नहीं कहा जाता।तो ऐसे2 समझाना चाहिए।मंदिरों में गंगा घाट पर भी समझा सकते हैं।सदगति दाता सर्व का एक ही बाप है।यह सब प्वाइंट्स बुद्धि में धारण करो।नोट रखने अच्छे हैं।पक्के2 याद कर देना चाहिए तो समझाने में भी सहज होगा।घड़ी2 स्मरण भी होगा तो बहुत खुशी होगी।सर्विस बिना तो उन्नति को पा नहीं सकते।बहुतों को आप समान बनाने से मर्तबा उंच होगा।पास विद ऑनर होना चाहिए।ओम

23.1.67 रात्रीक्लास–भगवान को बाप तो सब समझते हैं।अंग्रेजी में भी कहते हैं गॉड फादर।अब कोई से पूछा जाये कि गॉड फादर को जानते हो?जब कहा जाता है गॉड फादर तो जरूर बाप और बाप के वर्से को जानते होंगे।फिर नेति2 कह ही कैसे सकते हैं?गॉड फादर तो सबका फादर ठहरा ना।वो है रचता नई दुनियां का।नई दुनियां है सतयुग ,पुरानी दुनियां है नर्क।कितनी सहज बात है।इसको स्वर्ग तो कोई नहीं कहेंगे।इसको कहा ही जाता है पुरानी दुनियां कलियुग।समझाना चाहिए कि जब गॉड फादर कहते हो तो सतयुग का वर्सा मिलना चाहिए।जरूर मिला होगा ;परंतु ऐसी सहज बात भी कोई समझ नहीं सकते।स्वर्ग कब था यह किसको पता नहीं पड़ता है।यह भी जानते हैं ल.ना. स्वर्ग के मालिक थे जरूर।इनको बादशाही बाप से मिली होगी।अच्छा, गॉड फादर रहते कहां हैं?कहेंगे परमधाम में।तो जरूर तुम बच्चे भी वहां के रहने वाले होंगे।मनुष्यों की आसुरी बुद्धि होने कारण ऐसे2 समझ विचार उनके चलते ही नहीं हैं।बाप कितन सहज करके बताते हैं।अभी तो बच्चों को मालूम हुआ कि बरोबर हम शिवबाबा का वर्सा ब्रह्मा द्वारा ले रहे हैं।यह जो बैठा हुआ है वो है साधारण तन।प्रजापिता कोई साधारण थोड़े ही होंगे।वो तो ऐसे हुये जैसे कि शिवबाबा।शिवबाबा की सब आत्मायें सन्तान।प्रजापिता ब्रह्मा के भी सब बच्चे।तो साधारण जरूर और हैं जो प्रजापिता ब्रह्मा नहीं हैं।यह साधारण था ना।वो प्रजापिता नहीं था।पत्थर बुद्धि होने कारण कोई समझते नहीं हैं।अभी तुम समझते हो बरोबर भारत स्वर्ग था।जरूर बाप ने उनको वर्सा दिया होगा।शास्त्रों में आयु बड़ी2 लगा दी है।तुम बच्चे जानते हो यह दादा भी राजयोग सीख रहे हैं और कृष्ण बनने वाले हैं।वो ही श्रीकृष्ण की आत्म 84जन्म के बाद यह बैठी है।इनको ही कहा जाता है सांवरा गांव का छोरा।कृष्ण तो हो नहीं सकते।बाकी उनकी आत्मा तो है ना।गाते भी हैं सांवरा गांव का छोरा।कृष्ण को कैसे कह सकते हैं।वो तो विश्व का मालिक उनको हम किस

हिसाब से कह सकते हैं गांव का छोरा मक्खन चुरा कर खाने वाला।अब कितने समझदार बन गये हो।सारे विश्व के आदि मध्य अंत को जान रहे हो।सारी विश्व बुद्धि में खड़ी है।सारे झाड़ की आदि मध्य अंत का नालेज बुद्धि में है।बाप कहते हैं मुझे और मेरी रचना को जानने से तुम सारे विश्व के मालिक बन सकते हो।मूल बात है आत्मा जो पतित है वो पावन जरूर होनी चाहिए।नालेज तो बड़ी डैम चीप है।उस नालेज में तो बहुत खर्चा है।इसमें कोई खर्चा नहीं।सिर्फ मेहनत है तो बाप को याद करने में।पावन जब तक ना बनेंगे तो पावन दुनियां का मालिक कैसे बनेंगे?याद के लिए बाबा कितना समझाते हैं।आगे तुम लौकिक बाप को याद करते थे।अब तुम लौकिक के होते पारलौकिक को याद करो।कर सकते हो।बेहद के पारलौकिक बाप को और कोई नहीं जानते।बाप सत है ,चैतन है, ज्ञान का सागर है।शरीर तो जड़ पांच तत्वों का बना हुआ है।आत्मा तो आत्मा है।किससे बना हुआ है कुछ कह नहीं सकेंगे?आत्मा तो अनादि अविनाशी है।कितनी छोटी आत्मा भृकुटि के बीच में रहकर कितना पार्ट बजाती है।यह सब बातें हैं नई।शास्त्रों में तो है नहीं।तुम बच्चों को अपने को आत्मा समझकर बाप को भी ऐसे ही याद करना है।बिंदी में कितना ज्ञान है।बीज छोटा होता है ना।सरसों का दाना अथवा खसखस कितनी छोटी होती है।तुम बच्चों को बाप कितना सहज बताते हैं।बाप कहते हैं तुम भी आत्मा ,मैं भी आत्मा हूँ।मैं सुप्रीम हूँ।मुझे परम–आत्मा कहते हैं।और कोई मनुष्य नहीं जिसकी बुद्धि में झाड़ का ज्ञान हो।इसको कहा ही जाता है सहज याद बाप और वर्से की।बेबीज तो नहीं हो।बड़े हो।समझते हो।फिर भी माया भुला देती है।बाप और वर्से की खुशी में रहने नहीं देती है।तुम बचचे सम्मुख सुनते हो।जैसे बाप नालेजफुल वैसे ही हम भी नालेजफुल।तुम्हारे और बाप में फर्क ही क्या है?वो बाप की आत्मा नालेजफुल पूर्ण पवित्र है।तुम पवित्र बनने लिए पुरुषार्थ कर रहे हो।अब 84 का चक्र पूरा होता है।अब चलना है घर।नाटक पूरा हुआ।तुम इसी खुशी में रहो तो भी कितना अच्छा है।आपस में भी यही बातें करते रहो।बाकी झरमुई–झगमुई बातों में जास्ती नहीं।घर में तो ऐसा साथ मिल ना सके।बुद्धि में आता है यह बिचारे बगुले हैं।कुछ नहीं जानते।जैसे बहुत पढ़ा हुआ मनुष्य एक खेती–बाड़ी करने वाले मनुष्य के लिए कहेंगे बिचारा.....अब तुम समझते हो यह बिचारी प्राइममिनिस्टर आदि क्या है।पहले नम्बर वाले ल.ना. में भी यह नालेज तो इनमें हो सकती है।ऐसे2 अपने साथ बातें करने से बहुत सुख मिलता है।रोमांच खड़े हो जाते हैं।बाप कहते हैं मैं सब बच्चों को रावणराज्य से ,दुःख से छुड़ाने आया हूँ।बाप आये ही हैं बच्चों को सुख देने लिए।कितनी खुशी होती है।इनकी आत्म भी कहती है मुझे भी बहुत खुशी होती है।अकेला बच्चा हूँ ब्रह्मा।यह सब वर्सा बाप से ले रहे हैं।मैं भी बाप से ले रही हूँ।बाबा इनको पढ़ाते हैं तो मैं भी पढ़ता हूँ।कितना वण्डर है।अच्छी तरह अंतर्मुखी होकर रहे तो कितनी खुशी हो।सम्मुख रहने से रिफ्रेश अच्छे होते हैं।कहीं भी जावेंगे तो कहेंगे बापदादा आ रहे हैं जिनसे ही हम वर्से के मालिक बनते हैं।मोस्ट सिम्पल है।माया के तूफान तो आवेंगे।यह याद स्थाई रहे तो वो अवस्था अंत में होगी।अभी पूरा पुरुषार्थ हुआ नहीं है।अभी पढ़ना है।फिर हम मृत्युलोक से अमरलोक में ट्रांसफर हो जावेंगे।अमरलोक से मृत्युलोक, मृत्युलोक से अमरलोक यह चक्र है।यह बच्चों को समझ में रहे तो अतिइन्द्रिय सुख की महसूसता हो।डोज ऐसा है जो इसका नशा चढ़ जाना चाहिए।यह अविनाशी ज्ञान का डोज एक ही जन्म में मिलता है।इनको रुहानी ज्ञान कहा जाता है।गाया जाता है मनुष्य से देवता किये करत ना लागी वार।चढ़ती कला में कितना थोड़ा समय लगता है।उतरती में कितना समय लगता है।तमो से सतोप्रधान बनने में बहुत मेहनत लगती है।